प्रारम्भिक सम्बोधन

अब सभा की कार्यवाही प्रारम्भ की जाती है ।

माननीय सदस्यगण,

भारत के संविधान के अधीन गठितचतुर्दश बिहार विधान सभा के द्वितीय सत्रारम्भ के सुअवसर पर मैं आप सबों का हार्दिक स्वागत करता हूं ।

प्रजातंत्र में वस्तुतः विधायिका ही शासन की रीढ़ होती है । जन-प्रतिनिधि के रूप में विधान-सभा के सदस्य बन जाने के बाद सदन में जन-समस्याओं को उठाते रहना माननीय सदस्यों का मुख्य दायित्व है और उन जन-समस्याओं का निराकरण करना सरकार की गम्भीर जिम्मेदारी है । सदन की विधायिका तथा सरकार के बीच जीवन्त संवाद का सर्वोच्च मंच है । इस मंच का सही रूप में इस्तेमाल करना हम सबों का प्रथम धर्म ही नहीं, अपितु पुनीत कर्त्तव्य है । मेरा साग्रह अनुरोध है कि सभा के सफल कार्य संचालन में आप लोग सार्थक सहयोग प्रदान करेंगे ।